क्या खोया क्या पाया?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्या खोया क्या पाया? मूल्यांकन का सूत्र है। मानव बाह्य और आंतरिक जगत् में जीवनयापन करता है। बाहरी शुद्धि के बिना आंतरिक शुद्धि नहीं होती। जीवन अंहकार और कषाय का परिणाम है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमने क्या खोया क्या पाया, इसका मूल्यांकन करते रहना चाहिए। परीक्षा देने के पश्चात् सबको परिणाम का इंतजार रहता है। परिणाम इंतजार को शान्त कर देता है। परीक्षा सावधानीपूर्वक देनी चाहिए जिससे परिणाम को देखकर पछतावा न आये।

इस संसार में आकर मानव ने क्या खोया और क्या प्राप्त किया? इस बात की समीक्षा होनी चाहिए। मानव व्यवहार जगत में जीवनयापन करता है। उसको समय–समय पर समीक्षा करनी चाहिए। उसको समीक्षा कर यह जानना चाहिए कि मैं कौन हूँ? मैं कहां से आया हूँ? मैं कहॉ जाऊंगा? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर में सब कुछ समाया हुआ है। मानव जीवन बहुमूल्य है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि–

बड़े भाग्य मानुष तन पावा,
सूर नर मुनि सद्ग्रन्थन गावा।

मानव का शरीर साधन–धाम और मोक्ष का द्वार है। जीवन और जगत की दृष्टि से इसका बहुत मूल्य है। शरीर यदि स्वस्थ रहता है तभी सभी प्रकार की धार्मिक क्रियाएं की जा सकती हैं। मानव जीवन को केवल कोरा स्वप्न ही नहीं कहा जा सकता। दार्शनिक दृष्टि से वर्तमान का अस्तित्व अनुभवगम्य नहीं है। हम या तो अतीत में जीते हैं अथवा भविष्य में रहते हैं। प्रत्येक क्षण अतीत बनता जाता है। भविष्य को हम वर्तमान बनाते रहते हैं। हमारे जीवन के आगे–पीछे मृत्यु का साम्राज्य रहता है। सुबह होती है, शाम होती है, उम्र इसी तरह बीतती जाती है। जब अन्त समय आता है तब ऐसा लगता है कि इतने वर्षों का समय कितनी जल्दी व्यतीत हो गया। इतने वर्षों पहले होने वाला बाल्यकाल कल जैसी घटना लगता है। सब कुछ

सीनेमा दृश्य की तरह आँखों के सामने नाचने लगता है। ऐसा लगता है कि सब कुछ स्वप्न था।

जीवन के सुख–दुःखों की स्मृति स्वप्न के सुखद–दुःखद अनुभवों की भांति शेष रह जाती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव जीवन समस्त अनुभव स्पप्न मात्र हैं। जीवन में जाग्रतावस्था और स्पप्नावस्था दोनों अवस्थाएं रहती हैं। मनुष्य इस सष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। वह एक ऐसा प्राणी है जो खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। अपने हांथ–पांव, बुद्धि–विवेक का इस्तेमाल कर सकता है। विश्व में जितनी भी कलाकृतियां हैं और जितनी भी संरचनाएं हैं, वे समस्त मानव के इन हाथों की ही देन हैं। ये कलाकृतियां सृजनहार की सृजनशीलता को सार्थक करती हैं।

मनुष्य के क्रियाकलाप को देखकर यह सोचना स्वाभाविक है कि एक छोटा सा जीव इतना शक्तिशाली कैसे बना? मावन विश्व के प्रत्येक पदार्थ को अपने लिए उपयोगी बना लेता है। बड़े–ड़ि हिंसक जीवों को भी वश में कर लेता है। शेर और चीता जैसे जानवरों को अपने ईशारे पर नचा देता है हाथी जैसे विशालकाय जीव को एक इंच के अंकुश से वश मतें कर लेता है। क्षुब्ध अथाह सागर की ऊँची लहरों को चीरते हुए जलयान द्वारा एक देश से दूसरे देश की यात्रा कर लेता है। न जाने ऐसे कितने आश्चर्य के कार्यों को करके अपने हौंसले को बुलन्द रखता है।

मानव का असली पक्ष उसकी बौद्धिकता है। बौद्धिकता मनुष्य को विश्लेषणात्मक बना देती है। विश्लेषण द्वारा वह वस्तु का वैज्ञानिक विश्लेषण करता है। वह अपने लाभ के लिए कभी–कभी केवल अन्य व्यक्ति की हानि करे आनन्दित होने के लिए बड़े से बड़ा पाप कर्म कर डालता है। रिश्वत, चोरी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूट खसोट और अपहरण जैसे घृणित कार्यों को कराने में भी हनहीं हिचकता। इसी मनुष्य की बौद्धिकता एक ओर उसे रचनात्मक प्रेरणा देती है तो दूसरी ओर उसको विखण्डन और विनास के प्रति प्रेरित करती हैं। कभी–कभी अपने दुराचरण से मनुष्य पशु को भी पीछे छोड़ देता है। इस प्रकार मानव जीवन में बहुत कुछ खोता है और बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। ये सब भौतिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुएं हैं।

हम जिदंगीभर दूसरों को ही देखते रहते हैं। अपने को जानने का प्रयास ही नहीं करते। जो व्यक्ति अपने को जान लेता है वही असली ज्ञाता है। जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए चार पुरूषार्थों की व्यवस्था की गयी है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। जीवन के चार पुरूषार्थ हैं। अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष है। सज्जन और दुर्जन अन्त समय आने पर यही कामना करते हैं कि इस जीवन से मुक्ति मिल जाये। किन्तु जो जैसा कर्म किये रहता है उसका फल भोगने के लिए वह इस संसार में आता है और कर्म का परिणाम भोग लेने के पश्चात इस संसार से बिदा हो जाता है। जीवनभर की कमाई यहीं छूट जाती है। शरीर भी यहीं छूट जाता है और पंचतत्त्व में विलीन हो जाता है। जीव केवल कर्म लेकर आता है और कर्म लेकर ही जाता है। इसलिए इस संसार में आने के बाद जीव को सत्कर्म करना चाहिए। सत्कर्म करने से जीव की ऊर्ध्वगति होती है।